

DPN 6119

Title : पञ्चरक्षा PAÑCARAKṢĀ

Run. No. 6810

Cat. No.

Micro. No.

Subject Dharani

Religion : Hindu / Bauddha ✓

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 21 × 6

Folios 25 Lines (in a page) 4
missing 1, 8, 9, 14-16, 19, 21, 23, 26, 28, 31.
Chapt. / act /

Compl. / Incompl. ✓

Author / translator

Scribe / donor

फणीन्द्ररत्न वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Phanindra Ratna

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Bajracharya

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

पंच रक्षा।

सर्वेनथागतान्मात्स्यमास्वासायन्तु॥ ॐ वक्ष्ये शिष्यश्वाभिय श्विकाथय श्विमावय श्वम
षय श्विमाथय श्वमंता नभाचय श्वमं नसि यविष्टु द्धन सर्वेनथागतान् दया विष्टि न
ॐ वक्ष्ये श्वमंता नभाचय श्वमं नसि यविष्टु द्धन सर्वेनथागतान् दया विष्टि न
ॐ वक्ष्ये श्वमंता नभाचय श्वमं नसि यविष्टु द्धन सर्वेनथागतान् दया विष्टि न
ॐ वक्ष्ये श्वमंता नभाचय श्वमं नसि यविष्टु द्धन सर्वेनथागतान् दया विष्टि न

दत्तयूयादियूजादि कर्तव्या यद्युक्तं तर्ह्युक्तं दत्तयताय दत्तय्या यद्युक्तं दित्यायं ४ द्युतमयूनाशनं
यूजयित्वा यद्युक्तं दत्तय ४ दित्याय ४ सर्वयूसाखयदादितिमिनि ४ ज्ञानं वर्युक्तं जायां सनयानयि
ज्ञानि हवोनि ॥ दत्तम ४ सर्वतथागतं ४ सर्वोक्तं मांयनियू नकया सर्वतथागतं हवोति नखादा
जानतुयस्यमंनु ४ ज्ञानं यद्युक्तं जययत् ॥ सय सयत्वा न यूजा मनुजययत् ॥ दक ४ कसय

प्रकाशितवा॥ ज्ञानं मुक्त

...महापद्म-आयुष्मान् गेन...
...नाम्नाम्नीनायां युष्मान्मितायां चयां चतुःका...

आर्यादत्ताकिं भवति बोधिसत्त्व महासत्त्व। अथ यस्मान्
कलयन्तावत्कूलद्वारेणावत् आसाम्भाम्भीजायां यस्मात्

न्यतसा॥सक्तिकलयुतदृष्टिना॥सत्त्वानानावाधियनियोजिता॥माहुर्यस्कृत्यातधमयहिनाय
सुखाय॥ॐमांसर्वतथागत॥उद्योविजया॥नामध्यानधी॥ध्यानयत्॥यनस्यध्वविनन॥संयुकास
यत्॥दीद्यायस्कृता॥सयादयति॥मूर्धस्वल॥अर्थावनाकिन॥ध्व॥वाधिसत्त्वमहासत्त्वा॥नृ
यासनात्॥कृता॥शिलियुनता॥कृत्वा॥नगवत्क॥भक्तदवाचत्॥दयत्तु॥नगवान्॥सर्वतथागता॥उ

॥ उँ मूनिश्महामूनिमतिश्महामति ममति मूमति ॥ १ ॥ अकूतकाटि ४ यत्रिष्टुब्ध विमूढ वृद्ध
 ॥ उँ ह ह ॥ जयश्चिजयश्मजश्मजश्मजयश्चर्ववृद्धानां विविधानां विविधैः ॥ उँ शुद्ध
 ॥ उँ ह ह ॥ जयश्चिजयश्मजश्मजश्मजयश्चर्ववृद्धानां विविधानां विविधैः ॥ उँ शुद्ध
 ॥ उँ ह ह ॥ जयश्चिजयश्मजश्मजश्मजयश्चर्ववृद्धानां विविधानां विविधैः ॥ उँ शुद्ध

ग० ग० ॥ ॐ गं लयत यस्मादा । गं लयत यस्मादा । ॐ गं लोचनं नायस्मादा ॥ ॐ गं ल
युजिता यस्मादा ॥ ॐ कं नृशस्मादा ॥ ॐ मं नृशस्मादा ॥ ॐ सं नृशस्मादा ॥ ॐ तु नृशस्मादा ॥ ॐ नमान
मं शस्मादा ॥ ॐ दं मानं च गं लयति हृदय ॥ यः किञ्चित्कल यूषा वा कल दूहिता वा शिङ्गु
वा शिङ्गुली वा उयासका वा उयासिका वा ॥ यः किञ्चित्काय्य मानरूपं मनसा ध्यात् विनश्य

यूजाम्बा दशाकनगमसंम्बा ॥ नाजकनगमम्बा ॥ तनवद्वाना रगवनता यरुक्त्वा प्रायगण
यति हृदयस्य वाजा नूवा नयिरुवां ॥ तस्य सर्वोद्योगि सिधार्क ॥ नावर्मसये ॥ सर्वे कली कलह गिव
तमप विगुह विवाद सूननित्यां कलुवां ॥ सर्वयुसम ॥ गच्छति दिनदिनं कलमूथाय सफ
वाजा नूवा नयिरुवां ॥ महासी राहा रु विद्याति ॥ ध्रुविना प्ररु विद्याति ॥ न चास्य कश्चित् देवता ॥

गवन् ॥ उगा उगनूया ॥ अल्य नूया ॥ कूना कूना विंका ॥ सत्त्वानां विहठ र्यकि ॥ डाडा ॥
हाजा ॥ कूर्वी कि ॥ केषा ॥ शक्ति ॥ दुवामयहन कि ॥ कषा ॥ किर्या लमयहन कि ॥ कषा ॥ शक्ति ॥
दीर्घाय ॥ सत्त्वानां सत्यायुषधि कूर्वी कि ॥ जवं सत्त्वान कय ॥ दुवन वरुथ र्यकि ॥ तद्गथ
नु ॥ रागावान् ॥ ताद्गं प्रमय र्ययं ॥ रागावन् ॥ समग्री रुत्वा ॥ समनका ॥ वनल कविष्ठा नि

॥ शिवानाहासाधू २ वरुयाहिय ४ न्मं सर्वसत्ता नां मथायकया मूल्याद्य महगुहाति ३
 कन तथगत यनियुद्धसि १ तच्छ ६ साधूच ७ वरुच मनसिकनराधिकरु ८ नगुहा ९ अं उगु
 हनूया १० मगिकुनाति ११ शिव १२ नां गुहतिगुह १३ तलदिव्यायुजा मया श्री १४ यथानक्रम १५
 वर्णु कदन सर्वेषां दुस्यनि १६ नगुहा १७ यजीताय १८ शनिनि १९ निदह स्यावमानिनां २० दवा २१ ७२

॥ नाद्र कथुकि ४ ॥ सकाविंशति नद्रुगिदिदि मयमानो महावरुसमयातका नाधिसूतं विरुन
 तिसम १ अनाके वाधिसत्त्व सहस्रसाह्य ॥ तद्यथा ॥ वरुयाहो नच नामवाधिसत्त्व न महासत्त्वना
 वरुचं नच नामवाधिसत्त्व न महासत्त्व न वरुस्य न नच नामवाधिसत्त्व न महासत्त्व न वरु
 यनरुक्त नच नामवाधिसत्त्व न महासत्त्व न वरुविक्रम नच नामवाधिसत्त्व न महासत्त्व न व

१०
उलंका लनव नामवाधिसत्त्वान महसत्त्वान जतिवहनव नामवाधिसत्त्वान महसत्त्वान अत्र
लावकिन ध्वजनव नामवाधिसत्त्वान महसत्त्वान समंकावलकिन ध्वजनव नामवाधिसत्त्वान
न महसत्त्वान लोक गीयायनव नामवाधिसत्त्वान महसत्त्वान विकष्टिवकनव नामवाधिस
त्त्वान महसत्त्वान यद्गहनव नामवाधिसत्त्वान महसत्त्वान यद्गहनव नामवाधिस

५
ध्वेव किन्नरा ध्वेव यत्तगा ध्वेव नाकसा ध्वेव मनूया समयकिच कन द्या ध्वेव म
हानक मग्नत तेजसा ध्वेव जातयां म्यत्र कामि मनु ध्वेव यथा नूकम ४ अर्थखलु दगहनान् ४
कमनि तथागत ४ स्वहृदयात्कन विकीर्तित नाम जस्मिनि ध्वेव गहानां समृद्धि युवं सयंति स्म
अर्थखलु तत कलनेव त सर्वगुहा ज्ञादियादय ४ उच्यते रगावन् साकमनितथागत

संम्यक् वदं सर्वो हि दि. व्याप्तिरियं ज्ञाहि ४ यजयित्वा यत्तमा जानूहि. त्रियतकृतां ज्ञाने यून
नो नृत्वा. तगवन्क भत दवा चत ॥ अनूगृह्णाय. तगवन्क. तथगतन्. अहं ४ संम्यक् वदं न
नदं शयंतु भक्त गवान्. धर्मैर्याय. यत वयं. सर्वसां भगवत्वा ४ तस्य धर्मज्ञानक स्य. न को
कृन्म. गुफियनिगादा. यनिगृहं यनियाननं. न शक्तिस्य स्ययन. दह्ययनिदानं. सययनिहानं.

त्वा. द्वा. दशां दुल. यमान्य. बहु न स. बहु न द्वा. बहु न स. न शासनं ४ कृतामान. व. समन्वितं
कर्त्तव्य. तस्य स. धिगतकमलायनि नक. कं कं मग. न स. लं. कंचित यत. दवशास्त्र. न. को
यस्य नूय भर्त. मृजाल्यासिक्तकनं. नक वरूं स हस हसं. सूर्यकांठि. सिन्दूर वरूं. मंत जामाति
नविगृहं. अस्वदयं. कि नशा डनं. क नूय थय ४ डं. आदित्याय नमः ४ डं. मद्याका जाय स्वाहा.

॥यू र्वे स्यादिहि नक कम जाय नि य गु या ग न्ध म लु लं क ॥ साम वा ह न ॥ ॐ ति ला य ॥ शित व र्ण
उ दा म क ठ ध ना ॥ कू जा द य ना ॥ इ क स र्ग क म लू ध नं ॥ क म न्द य य्या न क ॥ अ स्य द यं ॥ ध य
शि ध ना र्ण ॥ शो ड न दृ ता द नं ॥ ॐ उ दा म र्ग वि क मा य न म ॥ ॐ शा ता श र्वा य स्वा हा ॥ द कि र
॥ सा दि हि ॥ धू क म जा य नि न द नं ॥ ग न्ध म लु लं क ॥ शि क्क मं ग लं ॥ ॐ को च क व र्ण न क ॥

॥ म क ठि श कि ध ना ॥ व न दं ह र्ण ॥ शो ड न सं स्य मा स र्ग क ॥ गु ण द नं वा ॥ ध य गु गु ल ॥ ॐ न का न्क
॥ साम द्वा ना क ना य स्वा हा ॥ य ष्ठि मा यां ॥ दि हि न क य द्वा य नि क द्वा ॥ गु च ग न्ध म लु लं क ॥ व र्ण न क
॥ वा नी दू ध स्या त् ॥ या त व र्ण न क ॥ ॐ न श र्क र्ग क म लू ध नं ॥ शो ड न मां स्य म र्ग मा स
॥ क र्ण नं ॥ ध य ग न्ध न र्ण ॥ ना ड य र्ग ॥ ॐ स यी त व र्ण य न म ॥ द द्वा य न म ॥ ॐ न श र्क र्ग दि

॥ शि॥ शि॥ शि॥ कमलाय जि॥ दत्त दान॥ गन्धमलुलं॥ यतिवाजजको॥ न॥ येवक्तुयकावन्॥ वर्णुता॥
स॥ नक॥ म॥ ४॥ अ॥ क॥ सु॥ क॥ म॥ लु॥ ल॥ अ॥ न॥ ४॥ अ॥ स॥ द॥ य॥ द॥ धि॥ र॥ क॥ ॥ का॥ जन॥ की॥ न॥ वा॥ म॥ य॥ घृ॥ त॥ य॥ न॥ ४॥
॥ डें॥ ला॥ हि॥ त॥ व॥ हू॥ नि॥ र्ग॥ ग॥ मा॥ य॥ ॥ वृ॥ ह॥ स॥ य॥ त॥ डें॥ त॥ म॥ ४॥ का॥ हा॥ स॥ द॥ य॥ स॥ वा॥ हा॥ ॥ अ॥ ग्नि॥ यो॥ दि॥ सि॥ ॥ न॥ क॥ य॥ धा॥
य॥ जि॥ ॥ न॥ क॥ व॥ न॥ न॥ ग॥ न्ध॥ म॥ लु॥ लं॥ क॥ ४॥ म॥ क॥ या॥ त॥ स॥ य॥ त॥ ॥ व॥ तु॥ ध॥ न॥ ॥ का॥ की॥ न॥ य॥ लं॥ व॥ हू॥ का॥ जन॥ ज॥

॥ शि॥ शि॥ शि॥ विलायतुभूय॥ ॥ डें॥ वि॥ न॥ या॥ क॥ त॥ न॥ क॥ न॥ धि॥ न॥ सि॥ न॥ ॥ ना॥ हू॥ हू॥ ना॥ न॥ जन॥ मा॥ स॥ ॥ न॥ हा॥ य॥
न॥ म॥ ४॥ ॥ डें॥ अ॥ म॥ त॥ यि॥ या॥ य॥ स॥ वा॥ हा॥ ॥ नि॥ सा॥ न्या॥ दि॥ सि॥ ४॥ न॥ क॥ व॥ हू॥ ॥ हा॥ ना॥ न॥ हू॥ ॥ य॥ जि॥ वृ॥ द्वा॥ ग॥ न्ध॥ म॥ लु॥ लं॥ क॥
॥ व॥ हू॥ ल॥ क॥ ॥ व॥ ता॥ न॥ श॥ व॥ त॥ ॥ क॥ तु॥ ध॥ म॥ व॥ हू॥ ॥ क॥ ठा॥ डें॥ लि॥ ना॥ म॥ क॥ ति॥ ॥ स॥ य॥ द्वा॥ न॥ ४॥ अ॥ स॥ द॥ य॥ घृ॥ त॥
य॥ लं॥ क॥ ॥ का॥ जन॥ ॥ स॥ डें॥ न॥ सं॥ धू॥ यं॥ ४॥ ॥ डें॥ धू॥ म॥ ह॥ व॥ हू॥ ॥ स॥ नि॥ श॥ य॥ न॥ म॥ ४॥ ॥ डें॥ का॥ ति॥ के॥ रु॥ व॥ स॥ वा॥ हा॥ ॥ न॥ हू॥

5

१
वद्वयस्वाहा॥ उँ वृहस्पतियस्वाहा॥ उँ शुक्रायस्वाहा॥ उँ कृष्णवधूय सन्निधनायस्वाहा॥ उँ नाहव
स्वाहा॥ उँ कर्तुवस्वाहा॥ उँ वृद्धायस्वाहा॥ उँ वज्रधनायस्वाहा॥ उँ यज्ञधनायस्वाहा॥ उँ कुमा नाय
स्वाहा॥ उँ सर्वगुहानां स्वाहा॥ उँ सर्वतकृतां स्वाहा॥ उँ सर्वे वायववाणीं स्वाहा॥ उँ रगवतियस्वा
हा॥ उँ द्वादशनामीनां स्वाहा॥ उँ सर्वविद्याहँ हँ हँ हँ हँ हँ हँ स्वाहा॥ ॥ ॐ माणि वज्रयाणि ॥

२६

५
रुसावृकानामभ्याजणी॥ सकुयदानि सर्वसिद्धि क नाहि॥ व गयश्चरव नूय न वज्रयाणि ॐ मा नि
अजणि॥ सकुयदानि॥ कालिकमास्य शुक्रयक सकमी मानरा॥ यात्राभि कृत्वाया चतुदशिराह हा
कृता मधुल मय्ययूजयित्वा दिनदिन संयुजिवा नतां चयत् न तत ४ यू ॐ मास्या सका नातु वाच
यत् न महादात यूजां कृत्वा तस्य नव नवति वर्षाणि जूय न मृत् रयनं रुविद्यति॥ उँ लायात॥

अत्र लीवधनकन ॥ तद्यथा ॥ ॐ असृष्टा असृष्टा लाठ्यव असृष्टसंशय असृष्टगुणममान २ मासय
 २ समयगान उयसम सर्ववाधिनयसम सर्वशकानमृत्कनयसम सर्वनक्रु दायनयसम स
 र्वदूष्टां वायसम रगत्वति थिहाविनि यूर्षां द्वि तुन तुन्नविदुन २ तुन २ तुमलखा
 हाहा ॐ उमेनि गन्धनि वन्दुनि मानं गी यूक्कसिस्वाहाहा ॐ अकूचमकन यूर्षां द्वि

२०

नमस्तुत्यवद्वरगवन् वृद्धयत अरुमिदानी युवकामि सर्वसत्त्वानूकंययाहा ॐ माविद्या
 महागजा महावन युवाक्रम येत्याह्वित सागुयामनिना वरुमयासत सावाध्यमान क
 यिकाह्यगहा सर्वविनायकादिद्याह्यमानि अकविरुतक लाविनयगताहा तद्यथा ॥ ॐ
 गिनि रगिनिगि रगिनिगि वनि २ गुणवनि अकाहावनि अकाहावि शुद्धयायविग

न। आकाशागतातलं। आकाशाविजानिषी। क्वचित्तुहारव नमस्ति। मूर्किकरवचित भोलिधना
 सुकलागसुवला सुवकं सुनतु सुव। सुव लुगोविन अतिन न। अनागत। युसेत्यन्य। नम
 ४सद्वया वद्वानां क्वचित्तु नजसा वद्व सुवद्व। रगावकि सुवकणी सुकम सुयतं सुदम
 सुदादवज वजदा रगावकि। हल्ल सुहल्ल विमलन जय हल्ल वल्ल हल्ल वल्ल वल्ल। व

२२

नचहु। महावल्ल लोनिगन्धविमसातं द्वि नधसि वच्चसि समति। यक्कसि सर्वनि सां क्वनि। उवि
 ठिग दाविठि। नादि ली। सर्वोथेसा धनिहन २ सर्वेण तु दहन २ सर्वेदूखनां। थन यिगच जकि
 नीनां मनूय मनूया लोके य वद्व दयविधसय जीवितं सर्वेदूखगहा लोनागय २ सर्वयायाहि
 सदागवकि। न करमासंयवि वानं सर्वेसत्त्वानां ४४ सर्वेण सव्वरुथायद रा ४ सर्वेदूखान तं ध

नक्रवृक्षमर्द्धकिलिखल्लाहानि। मातं दंशु। मृच्छं दंशु। निवानिणि। मातति। महामातनि। एवजस्यन
। चलुलिमातं। जूथसि। सनसि। वजसि। सुमति। यूकति। सवनि। सवनि। संकनि। उविठि। ददनि
। यचनि। याचनि। मदीति। सजल। सजल। सजल। नमद्यत्कृष्टविदा। नहिममहिलं। महाहीनं। शनिगुत
। शनिगुत। उरु। मरु। मरुतिनि। शदात। सुदात। चक्र। शचकिनि। शचक्रवाकिनि। शक्रन। शक्रल। शक्रलि।

[illegible]

॥ कदायौ जूनया तथगतसूत्याविद्यामकुट्य अविद्यानका कृता ॥ वृथियदिता हां यनिगदं यविद्या
लहा भतिस्रकाय द शुयविहान शकयनिहान विवदूखल विवनांसन कसुवर्कसाय वि
की भाय यूननव विवदयन सुविनं सुववजितं तविद्यानि ॥ उद्यान हा मातु हा वा उवयान
ऊनमातु हा ला ॥ अकाल चलान् सर्वव्याधिराशायनिमूद्यत ॥ सर्वनामा ध्यय प्रसादा नीर्य

॥ गतानावसां ऊनमातु हा यर्समठ कृति ॥ दिनादिना स्वाध्याय ॥ कुर्यात् महायुक्ता क
वर्नीश ॥ ॥ अर्यमहायति सना महाविद्या ॥ नास्ती नका वि अचान ॥ सेमाय ॥ ॥
र्यधर्मा हृदयरावा हृदयतां तथगत हृदयदल्लयां य अनिवाय उर्ववादि महाश
॥ लम हां ॥ ॥ ॥

५५

नल्ले॥॥ॐ नमो ब्रह्माय॥॥ॐ नमो
ब्रह्माय॥॥ॐ नमो ब्रह्माय॥॥ॐ नमो
ब्रह्माय॥॥ॐ नमो ब्रह्माय॥॥ॐ नमो
ब्रह्माय॥॥ॐ नमो ब्रह्माय॥॥ॐ नमो

सर्वविद्यासुखं विद्युष्यन्तं च ॥ वज्रकोशसंगतं ॥ वज्रसाययदं ॥ कायनं समा ॥ अहंकारं मया द्य
 यं ॥ मया दृढमिलं ॥ सर्वे गायति हतं ॥ संदृढमिलं ॥ सर्वे गायनाजीतं ॥ सर्वे सखा ॥ सादनकजनं ॥
 सर्वे विद्या ॥ दनकजनं ॥ सर्वे विद्या ॥ सुभूयकजनं ॥ सर्वे अक समाज ॥ विद्युष्यन्तकजनं ॥ सर्व
 कर्म ॥ विद्यायसकजनं ॥ सर्वे गदासादन ॥ कजनं ॥ सर्वे गदा विभाकन ॥ कजनं ॥ सर्वे कृता

कवहाकननं सर्वविद्यामनु कर्मकनायनं ॥ असिद्वानां सिद्धिकननं सिद्धानां व विना
 सकननं सर्वकमायदं सलानां सर्ववद्वनकावा यकलावकयाधि ॥ यथावायतिस्मडाडि
 नमानवतुयायशाडै नमः वलुवकयाधिय ॥ महायकसनायतय ॥ तद्यथा ॥ डैतुशुताठय
 रसू रसूठय रसू रसू यय रसू सलानि वाधय रसं वाधय रस रसय रस रस

रामय रसं रामय रसर्ववद्व वाधिनिकृतानि कठ रसं कठय रसर्वसुत न यठ रसं या
 ठय रसर्वविद्या वज रसूठय रवज रकठवज रमठ रवज रवजाठ हासानील वजसू वज
 सेनयसाहा ॥ डै रसू रसू लिनि रसू रसू रन रेलिनी रसू रसू रवज विजयायसाहा ॥ डै वज
 किलिकनायसाहा ॥ डै कठ रसू रचठ रमाठ न युमानायसाहा ॥ डै वल रनिलवल रहन रस

नरमनरमालयश्वरुविद्याननियंसाहा॥ॐ कृत्यं शिंष्टं शमहावज्जिलिकि लायसाहा॥
ॐ वन्धश्चोथश्महाकिलि कलायसाहा॥ॐ नून्श्चोथश्महाकिलि कलायसाहा॥ॐ हाहायश्चोथ
किलि कलायसाहा॥ॐ हनश्चोथश्महाकिलि कलायसाहा॥ॐ यहनश्चोथश्महाकिलि कलायसाहा॥सुधिया
निसिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥

हीवज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥
ॐ वन्धश्चोथश्महाकिलि कलायसाहा॥ॐ नून्श्चोथश्महाकिलि कलायसाहा॥ॐ हाहायश्चोथ
किलि कलायसाहा॥ॐ हनश्चोथश्महाकिलि कलायसाहा॥ॐ यहनश्चोथश्महाकिलि कलायसाहा॥सुधिया
निसिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥वज्जिलिन्धुन॥

20